भारत की विदेश नीति के बदलते आयाम : भाजपा संचालित राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन सरकार का एक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
के अन्तर्गत राजनीति शास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि
हेतु प्रस्तावित रूपरेखा

2017

पर्यवेक्षक
डॉ0 विनोद एफ. खोब्रागड़े
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाज शास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी
उमंगिका
शोध छात्रा
राजनीति विज्ञान

संकाय प्रमुख
प्रो. स्वामी प्रकाश श्रीवास्तव
समाज विज्ञान संकाय

विभागाध्यक्षा
प्रो. पूर्णिमा जैन
समाज शास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा–282005

भारत की विदेश नीति के बदलते आयाम : भाजपा संचालित राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन सरकार का एक अध्ययन

प्रस्तावना

विदेश नीति एक ऐसा माध्यम हैं जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संबंधों को स्थापित करता है व राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति करता हैं। एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के साथ संबंध न स्थापित करना भी एक प्रकार की विदेश नीति कहलाता हैं। विदेश नीति सिद्धान्तों, नियमों व लक्ष्यों पर आधारित होती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सदस्यों के साथ अपनें संबंधों का संचालन करने के लिए प्रत्येक देश एक नीति का निर्माण करता है, जिसे विदेश नीति कहते हैं। विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य देश के राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करना है। विश्लेषकों का मानना हैं कि, विदेश नीति उन सभी सिद्धान्तों, हितों तथा उद्देश्यों का समूह है जिसके अन्तर्गत एक राज्य दूसरे राज्यों के साथ संबंधों का संचालन करता हैं। अत: विदेश नीति में उन सिद्धान्तों तथा दिशा-निर्देशों का समावेश होता है, जो किसी राष्ट्र के अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की दिशा निर्धारित करते हैं। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति सें वर्तमान समय तक अधिक समय के लिए कांग्रेस की ही सरकारें रही हैं इसी कारण भारत की विदेश नीति के क्षेत्र में कांग्रेस का ही प्रभुत्व रहा हैं परन्तु कुछ समय के लिए गैर कांग्रेसी सरकारों की स्थापना भारत में हुई इसी कारण भारत की विदेश नीति मे कुछ हद तक परिवर्तन भी हुए। सन् 1977 में आपातकाल की समाप्ति के परिणामस्वरूप जनता पार्टी की गठबंधन सरकार के तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जन संघ दल के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को विदेश मंत्री बनाया गया। सरकार की विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त विशुद्ध गुटनिरपेक्षता रहा, जिसका प्रमुख उद्देश्य अमेरिका के साथ सम्बन्धों में सुधार रहा तथा विदेश नीति के क्षेत्र में कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त की परन्तु यह सरकार आन्तरिक मतभेद के कारण 1979 में ही सत्ताहीन हो गई। सन् 1980 में जन संघ नें जनता पार्टी से पृथक होकर भारतीय जनता पार्टी का सृजन किया। भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य सुदृढ़, सशक्त, समृद्ध व स्वावलम्बी भारत का निर्माण करना है। 1996 के आम चुनावों में भाजपा सत्तारूढ़ हुयी परन्तु बहुमत के अभाव के कारण यह शीघ्र ही सत्ताहीन हो गयी। भाजपा सरकार पुन: सन् 1998 में सत्तारूढ़ हुयी, तत्कालीन समय में भाजपा सरकार ने विदेश नीति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास किया। 11 तथा 13 मई 1998 को सरकार नें सफल परमाणु परीक्षण किया जिसके कारण कुछ पश्चिमी देशों नें भारत के साथ संबंधों में नकारात्मक परिर्वतन दिखाकर भारत पर दबाव डालनें का प्रयास किया। हालांकि परमाणु परीक्षण के सन्दर्भ में वाजपेयी का मानना था कि हमारे परमाणु हथियार विशुद्ध रूप से किसी विरोधी के परमाणु हमले को हतोत्साहित करने के लिए है, परंतु सरकार अधिक समय तक नहीं रही और सत्ता अस्थिर हो गयीं। भाजपा ने पुन: 1999 के चुनावों में सफलता प्राप्त की और प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन सरकार की स्थापना हुयी। वाजपेयी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण कार्य करनें का प्रयास किया गया। जैसे पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों में सुधार हेतु दिल्ली, लाहौर बस का आरम्भ, अमेरिका के साथ सम्बन्धों में

सुधार व कारगिल युद्ध में सफलता इत्यादि। (Kohli 2015:87-88)। सन् 2004 तक यह दल सत्तारूढ़ रहा व 10 वर्ष के अन्तराल के पश्चात् श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ सन् 2014 में सत्ता में आयी। भारतीय जनता पार्टी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही हैं। भारत को विश्वगुरू बनाना वर्तमान सरकार का प्रमुख उद्देश्य है। भारत के विश्वगुरू बनाने के विशाल उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नें भारत की विदेश नीति में व्यापक परिवर्तन लाने का प्रयास शुरू किया हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की वर्तमान विदेश नीति की प्रमुख प्राथमिकताएं आर्थिक विकास, भारत की बाह्य व आंतरिक सुरक्षा, पड़ौसी राष्ट्रों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्धों को बढ़ावा देना, दक्षेस व आसियान जैसे क्षेत्रीय मंचों को सशक्त बनाने की दिशा में प्रयास करना, ब्रिक्स, जी–20 जैसे वैश्विक मंचों के साथ संवाद व सहयोग बनाए रखना तथा एक्ट ईस्ट पॉलिसी, प्रथम पड़ोसीवाद, तकनीकी, भारतीय प्रवासी तथा ऊर्जा सुरक्षा इत्यादि। मोदी सरकार की विदेश नीति में बांग्लादेश के साथ सीमा विवाद को सुलझाया, फ्रॉंस के साथ राफेल विमान समझौता, सार्क देशों के साथ सम्बन्धों में सुधार इत्यादि महत्वपूर्ण प्रयास किए है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी वाजपेयी की भांति विदेश नीति का अनुसरण करते हुए चुनौतियों का समाधान करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अथक प्रयास कर रहे हैं।

सैद्धान्तिक रूपरेखा:

विदेश नीति एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्रों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में प्रबन्धों का विश्लेषण है। विदेश नीति के अन्तर्गत लक्ष्य, विधियां, रणनीतियां व समझौते सम्मिलित होते है। जैसे, दूसरे राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना, राष्ट्र के लक्ष्य व हितों को प्राप्त करना व चुनौतियों का समाधान करना इत्यादि (Jackson 2007:223)। जार्ज मौडल्स्की ने विदेश नीति को ''गतिविधियों की व्यवस्था'' कहा है। मौडल्स्की (Modelsky 1962) के अनुसार 'विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन गतिविधियों की व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक देश अन्य देशों के व्यवहार को ढ़ालने तथा अपने व्यवहार को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के अनुसार ढ़ालने का प्रयत्न करता है।' विश्लेषकों का मानना है कि विदेश नीति गतिविधियों की व्यवस्था व प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों के साथ संचार करता है। हिल, ब्रोक्हॉज तथा कैल्वर्ट ने विदेश नीति को दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध की नीति माना है। ब्रोक्हॉज इन्जाएक्लोपीड़िया (Brockhaus Enzyclopaedia 1967) के अनुसार ''विदेश नीति एक संस्था है जिसके माध्यम से दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों को बनाए रखने के साथ नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक हितों का प्रचार करती है व स्वतंत्रता को बनाए रखती है''। कैल्वर्ट (Calvert 1986) का मानना है कि ''विदेश नीति निर्णय व क्रियाओं का सम्प्रत्य है, जो व्यापक स्तर पर दूसरे राष्ट्रों से सम्बन्ध बनाए रखता है।''हिल (Hill 2003) का मानना है कि ''विदेश नीति अधिकारिक विदेशी सम्बन्धों का योग है जिसमें स्वतंत्र कारक जैसे राष्ट्र के आंतरिक सम्बन्ध प्रशासित होते हैं। सीसिल वी क्रैब तथा स्मिथ एवं हैडफील्ड ने विदेश नीति को उद्देश्य व हितों को प्राप्त करने की नीति कहा है। सीसिल वी क्रैब (Cecil v crabb 1972) का मानना है कि ''मूल रूप

में विदेश नीति दो प्रमुख तत्वों का संयोग है। इनमें एक तत्व है ऐसे उद्देश्य जिन्हें एक देश प्राप्त करना चाहता है और दूसरा तत्व है उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन कैसे होने चाहिए''। स्मिथ तथा हैडफील्ड (Smith and Hadfield 2008) ने कहा है कि ''विदेश नीति एक उपागम अथवा रणनीति है, जिसके माध्यम से राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों के माध्यम से लक्ष्यों को प्राप्त करती है।'' इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि ''विदेश नीति गतिविधियों की वह व्यवस्था है जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र उद्देश्यों व हितों को प्राप्त करते हैं।''

भारत की विदेश नीति की प्रकृति को जानने के लिए सर्वप्रथम सिद्धान्त को समझना होगा। सिद्धान्त नियमों व मानकों का संग्रह है। सिद्धान्त के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की वास्तविकता का ज्ञान होता है। आदर्शवाद, उदारवाद, यथार्थवाद, नव-यथार्थवाद इत्यादि सिद्धान्त विदेश नीति के अध्ययन के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं। आदर्शवाद व यथार्थवाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख सिद्धान्त है। आदर्शवादी सिद्धान्त शान्ति व कल्पना पर आधारित और यथार्थवाद वास्तविकता पर आधारित है तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति इसके हदय के समान है जो राष्ट्र को प्रभावित करती है (Pant 2009 : 97)। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का वह सिद्धान्त जो शक्ति को अपना केन्द्र बिन्दु मानता है वह यथार्थवादी सिद्धान्त है, जिसे आज भी प्रासंगिकता प्राप्त है। यथार्थवाद का परिचय अनेक यथार्थवादियों ने अपने ग्रंथों में दिया। जैसे चाणक्य का मण्डल सिद्धान्त ''अर्थशास्त्र'' (4th Century BC) यथार्थता पर आधारित है, सुन्जी ने अपने ग्रंथ ''द ऑर्ट ऑफ वार'' (5th Century BC) में चीन की सैन्य रणनीति का उल्लेख किया है। थ्यूसीडाइस ने अपने ग्रंथ ''द हिस्ट्री ऑफ पेलोपोनेशियन वॉर'' (431 BC) में पेलोपोनेशियन युद्ध को एथेन सिटी स्टेट में शक्ति वृद्धि के व्यवस्थित परिवर्तन का परिणाम कहा। थॉमस हॉब्स ने अपनी पुस्तक ''लेवियाथन'' (1651) में बताया कि राज्य की प्रकृति युद्ध के प्रति उन्मुख होती है। निकोल मैक्यिावली की पुस्तक 'द प्रिन्स' (1532) यथार्थता पर आधारित है। ई0एच0 कार ने 'द ट्वंटी ईयर्स क्राइसिस (1939) में यथार्थवाद को कल्पनावादी समाज के विरूद्ध स्थान दिया (Singh 2014:91-92)। हेन्स मॉर्गेन्थो ने पॉलिटिक्स अमंग नेशन्स (1948) में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को शक्ति के लिए संघर्ष बताया। मॉर्गेन्थो ने यथार्थवाद पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यथार्थवाद समय व परिस्थिति को ध्यान में रखकर प्रतिक्रिया करता है न कि आदर्शवाद की भांति राज्य के कार्यों में नैतिक सिद्धान्तों को मान्यता देता है (Morgenthau 1985:12)। विदेश नीति की सफलता राष्ट्र की शक्ति पर आधारित होती है व राष्ट्र का अस्तित्व शक्ति के माध्यम से सुनिश्चित होता है जैसा कि मॉर्गेन्थो का मानना है कि राष्ट्र की प्रतिष्ठा उसकी शक्ति के स्तर के आधार पर होती है यह वास्तविकता को प्रदर्शित करती है। यथार्थवाद मानव प्रकृति व भौतिक जगत की वास्तविकता एवं अनिवार्यता से जुड़ा है। यथार्थवाद को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सैद्धान्तिक परिवेश में काफी प्रभुत्वशाली सिद्धान्त माना जाता है। यथार्थवादी सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विश्व की व्याख्या व वर्णन की खोज करता है (कुमार 2011:1)। जैसे यथार्थवाद तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप, प्रतिक्रिया व वास्तविकता प्रदर्शित करता है। यथार्थवाद, राज्य की विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त है।

विष्णुगुप्त चाणक्य (कौटिल्य) भारत के प्रथम राजनीतिक यथार्थवादी है। कौटिल्य का यथार्थवाद 'अर्थशास्त्र' में प्रकट होता है। प्रस्तुत ग्रंथ में विश्व को यथार्थता से अवगत कराने का सफल प्रयास किया है। इस संदर्भ में हेनरी किसिंगर का विचार है कि 'अर्थशास्त्र राजनीति का यथार्थवादी दृष्टिकोण है। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में राज्य की सफलता हेतु नियम व मानकों का वर्णन किया गया है। यह प्रासंगिक, उपयोगी व समयानुकूल है। अर्थशास्त्र में शासक द्वारा शासन की संचालन व्यवस्था को निर्देशित किया है (Kissinger:2014)। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में विदेश नीति का उल्लेख किया है। कौटिल्य की विदेश नीति में प्रमुख रूप से मण्डल सिद्धान्त व षाण्यगुण्य नीति (Six Fold policy) का प्रमुख स्थान है। मण्डल सिद्धान्त कौटिल्य की विदेश नीति का आधारभूत सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार राष्ट्र का समीपवर्ती राष्ट्र, राष्ट्र का शत्रु व शत्रु का समीपवर्ती राष्ट्र, राष्ट्र का मित्र है (Karad2015:324)। मण्डल सिद्धान्त की भांति षाण्यगुण संधि कौटिल्य की विदेश नीति का आधारभूत सिद्धान्त है। षाण्यगुण्य में विदेश नीति के छः सिद्धान्तों (संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय व द्वैधीभाव) का वर्णन किया है, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राजनीतिक वास्तविकता के द्वारा राष्ट्रीय हित व लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है (Karad 2015:328)। विश्व पर विजय प्राप्त करने की सुदृढ़ व शक्तिशाली रणनीति को कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त में परिलक्षित किया है। कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त पर यह तर्क दिया गया है कि 'मण्डल सिद्धान्त प्राचीन भारत का राजनीतिक सिद्धान्त के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। मण्डल सिद्धान्त शक्ति के सन्तुलन के समान है। यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की भू–रणनीति का विश्लेषण करता है, यह भू राजनीतिक सिद्धान्त है (Karad2015:328)।

पं जवाहर लाल नेहरू को भारत की विदेश नीति का जनक माना जाता है व भारत की अब तक की सभी विदेश नीतियों का आधार नेहरू की नीति रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व जवाहर लाल नेहरू ने सितम्बर सन् 1946 में विदेश नीति के संदर्भ में पहली अधिकारिक घोषणा करते हुए कहा कि ''हम सभी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में स्वतंत्र राष्ट्र के समान स्वयं की नीतियों को लेकर पूरी तरह भाग लेंगे, हम आशा करते हैं कि दूसरे राष्ट्रों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध व प्रत्यक्ष रूप से समझौते करेंगे व दूसरे राष्ट्रों के साथ विश्व शांति व स्वतंत्रता पर आधारित सहयोग बनाए रखेंगे'' और ''भारत दूसरे राष्ट्रों पर अधिपत्य नहीं करेगा। हमारा एकमात्र उद्देश्य दूसरे देशों के साथ समस्याओं का समाधान शान्तिपूर्ण तरीके से करना है व दूसरे राष्ट्रों की सहायता व सहयोग बनाए रखना है व शान्तिपूर्ण साधनों के अतिरिक्त आक्रामकता का मार्ग नहीं अपनाना है (Gupta and Shukla2009:90-92)। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शीतयुद्ध के समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नेहरू ने वैश्विक रणनीति अपनायी जो तत्कालीन समय के लिए यथार्थवादी रही। नेहरू की विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त गुटनिरपेक्षता था। नेहरू का विश्वास था कि भारत गुटनिरपेक्ष राष्ट्र है। यह सम्मान, प्रतिष्ठा का पात्र है भारत साम्राज्यवादी शक्ति के गठबंधन से स्वतंत्र रहना चाहता है। इस संदर्भ में अमिताभ मट्टू ने भी कहा है कि ''नेहरू की रणनीति के दो आधारभूत स्तम्भ रहे– गुटनिरपेक्षता व आत्मनिर्भरता। यह परस्पर सम्बन्धित है। (Mattoo1996:204)। जैसा कि रेमण्ड एरन ने भी कहा है कि ''नेहरू की विदेशनीति आदर्शवाद व यथार्थवाद के साथ रही, जब दक्षिण एशिया क्षेत्र के मुद्दे

आए तब नेहरू ने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया (Mehta2009:210-211)। विदेश नीति के संदर्भ मे नेहरू का मानना था कि ''विदेश नीति आदर्शवादी होनी चाहिए जिसके समयानुसार उद्देश्य सुनिश्चित हो तथा आदर्शवाद के अभाव में यथार्थवादी हो जिससे वह अवसरवादी हो सकेगी। यह यथार्थवादी नहीं तो अप्रभावकारी होगी'' (Yadav 2009:3)। कई विद्वानों ने नेहरू को आदर्शवादी कहा है। जैसे 'नेहरू की आदर्शवादी विचारधारा का दृष्टिकोण गुटनिरपेक्षता व निःशस्त्रीकरण विश्व को स्थापित करना था। सन् 1949 में नेहरू ने विदेश नीति पर अभिव्यक्ति करते हुए कहा है कि ''हम कम से कम पन्द्रह साल तक शान्ति को बनाए रखना चाहते हैं, जिसके माध्यम से हमारे संसाधनों का विकास हो सके। हम वैश्विक संघर्ष को नहीं अपनाते क्योंकि भारत के लिए वृद्धि व विकास अनिवार्य रूप से अपरिहार्य है (Malone2015:95)। पं. जवाहर लाल नेहरू ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आदर्शवाद को न्यायोचित ठहराते हुए कहा कि ''आदर्शवाद कल का यथार्थवाद होगा।'' नेहरू ने आदर्शवाद व यथार्थवाद को संयोजित किया व गुटनिरपेक्षता व पंचशील को भारतीय विदेश नीति का आधार स्तम्भ बताया (Bandyopadhyaya 2003:223)। विश्लेषकों का मानना है कि नेहरू की विदेश नीति आदर्शवादी तथा यथार्थवादी रही। कई विद्वानों ने सुझाव देते हुए कहा कि नेहरू ने आदर्शवादी के रूप में कार्यभार सम्भाला लेकिन जब भारतीय सुरक्षा के समक्ष खतरे रहें तब नेहरू ने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया (Malone et al. 2015:92-93)। नेहरू तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यथार्थवादी उपागम को अपनाया गया हैं। नेहरू तथा इन्दिरा गाँधी के बाद विभिन्न विश्लेषकों नें भारत की विदेश नीति को सैद्धान्तिक आधार देने के लिए विशेष योगदान दिया हैं। शिशिर गुप्ता ने विदेश नीति के सैद्धान्तिक पक्ष को अपनी पुस्तक कश्मीरः भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों का अध्ययन 1967 में वर्णित किया, इन्होंने तृतीय विश्व की रणनीति स्थिति को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में समझानें का प्रयास किया है। (Gupta1981:45)। शिशिर गुप्ता ने तृतीय विश्व के राज्यों की विदेश नीति में यथार्थवाद के अंशो को उजागर करते हुए कहा कि यह राष्ट्र सिर्फ अपने व्यक्तिगत हित तथा सामूहिक हित का ही प्रचार नहीं करते वरन् अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता को बनाए रखने का प्रयास करते हैं (Gupta1981:48)। के.पी. करूणाकरण ने भी भारत की वैश्विक स्थिति में तर्क देते हुए कहा कि भारत ने एशिया के राष्ट्रों को जागृत अथवा प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एशिया के मुद्दों में भारत ने महत्वपूर्ण रूप से समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। भारत एशिया के मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका को निर्वहन करने के लिए प्रतिबद्ध रहा (Karunakaran 1952:33)। एम.एस. राजन नें सन् 1954 से 1956 तक के काल का अध्ययन करते हुए बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत आधुनिकीकरण के प्रति आकर्षित रहा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में योगदान दिया (Rajan1964:31)। एम.एस. राजन ने विदेश नीति के उपागम में नैतिक मूल्यों को महत्व देते हुए कहा कि भारत की विदेश नीति नैतिक मूल्यों से निर्देशित होती है (Rajan1964:48)। अरोरा व अप्पादोराई ने नेहरू की विदेश नीति कें संदर्भ में कहा की नेहरू की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय हित का प्रचार करना था (Arora and Appadorai 1975:1)। कान्ति वाजपेयी, सी राजा मोहन, एस

डी मुन्नी, जे एन दीक्षित, मुचकुन्द दुबे इत्यादि विशेषज्ञों का भारत की विदेश नीति मे महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।

समस्या कथन

भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता, समानता, विश्वबन्धुता व वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे प्रमुख मूल्यों पर आधारित है। भारत की विदेश नीति शान्ति, अंहिंसा इत्यादि मूल्यों का समर्थन करती आयी है। भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता तथा पंचशील सिद्धान्त का सर्वोपरि स्थान है। भारत की विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा में अभिवृद्धि करना है। भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने में कुछ हद तक सफल नहीं हुयी है। भारत की विदेश नीति का सृजन स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से हुआ है लेकिन इसकी आधारशिला में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ। भारत की विदेश नीति पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों में सुधार नहीं कर पायी है। स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्तमान समय तक भारत–चीन के मध्य सीमा विवाद आज भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त भारत–पाकिस्तान के मध्य कश्मीर मुद्दा, आतंकवाद इत्यादि को लेकर सदैव विवाद रहा है यह भी भारत की विदेश नीति की सफलता के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर रहे है। भारतीय जनता पार्टी हिंदुत्व विचारधारा पर आधारित दल है। हिंदुत्व से तात्पर्य भारत के प्रति अपार स्नेह से हैं जो राष्ट्रवाद में प्रतीत होता हैं यह भाजपा की विचारधारा में परिलक्षित हैं, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय जनता पार्टी धर्मनिरपेक्ष सिद्धान्त पर बल दे रही है, भारतीय जनता पार्टी की विदेश नीति में भारत को सशक्त बनानें का प्रयास कर रहीं हैं लेकिन भारतीय जनता पार्टी हिंदुत्व तथा साम्प्रदायिकता की भावना सें प्रभावित हुई है। इसका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिसने भारत की विदेश नीति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। प्रस्तुत शोध में भाजपा संचालित राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन सरकार के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति की समस्याओं का विश्लेषण कर भारत की विदेश नीति के मूल्यांकन की आवश्यकता है।

साहित्य पुनर्विलोकन

Swain (2001) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारतीय जनता पार्टी की रूपरेखा तथा कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए इस तथ्य पर बल दिया है कि भारत में बहुदलीय व्यवस्था है लेकिन फिर भी सन् 1947 से 1979 तक एक ही दल का प्रभुत्व रहा, लेकिन 1977 में सर्वप्रथम गैर कांग्रेसी दल सत्ता में आया। लेखक ने भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए यह बताया है कि भाजपा भारतीय संस्कृति व भारतीय मर्यादा का समर्थन व पाश्चात्यकरण का विरोध व हिन्दुत्व विचारधारा का अनुसरण करती रही है। भाजपा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, भारतीय जन संघ, जनता पार्टी का ही अभिन्न अंग अथवा विस्तृत रूप है। भाजपा का नेतृत्व वाजपेयी, आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, सुषमा स्वराज व तत्कालीन गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया। लेखक नें इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि

भाजपा के सामने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक चुनौतियां प्रमुख रही हैं। भाजपा की विदेश नीति में राष्ट्र की एकता व अखण्डता को बनाए रखना, राष्ट्रीय सुरक्षा, परमाणु नीति, संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण एशिया, प्रवासी, संयुक्त राष्ट्र संघ को प्रमुख प्राथमिकता दी गयी तथा विदेश नीति में वसुधैव कुटुम्बकम् के प्रमुख सिद्धान्त को अपनाया हैं।

Chaulia (2002) ने बताया है कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू ने भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है व वर्तमान भारत की विदेश नीति की आधारशिला भी नेहरू की विदेश नीति हैं। भारतीय जनता पार्टी ने भी भारत की विदेश नीति में सक्रिय रूप से योगदान किया है जैसे 11 व 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण। भारतीय जनता पार्टी की विदेश नीति नेहरू की विदेश नीति के प्रति वैकल्पिक थी। भाजपा का विदेश नीति के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण रहा है। नेहरू की विदेश नीति के आधारभूत सिद्धान्त गुटनिरपेक्षता, पंचशील, उपनिवेशवाद का विरोध, निःशस्त्रीकरण रहा है। लेखक ने बताया की वाजपेयी का परमाणु नीति के संदर्भ में कहना था कि भारत द्वारा परमाणु शस्त्रों का प्रयोग राष्ट्र की सुरक्षा व सीमा की सुरक्षा के लिए करना हैं। वाजपेयी ने पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों में सुधार लाने हेतु फरवरी 1999 में दिल्ली–लाहौर बस की ऐतिहासिक शुरूआत तथा आगरा सम्मेलन इत्यादि प्रयास किए। पाकिस्तान भारत की विदेश नीति की प्राथमिकता में सर्वोपरि रहा है। भारतीय जनता पार्टी प्रवासी वर्ग पर बल देती आयी है। लेखक का मानना है कि भाजपा की विदेश नीति परिस्थितियों के अनुरूप गतिशील रही है।

Singh (2006) प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन विदेश मंत्री ने इसमें प्रमुख रूप से अपना व्यक्तिगत परिचय, भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल विशेषकर 1998–2004 का परमाणु परीक्षण के संदर्भ में उल्लेख किया है। वाजपेयी के नेतृत्व में विदेश मंत्रालय का कार्यभार पार्टी के प्रमुख नेता जसवंत सिंह को प्रदान किया गया तथा इन्होंने भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इनके शासनकाल में तीन क्षेत्रों को प्रमुख प्राथमिकता प्रदान की गयी थी जिसका लेखक ने उल्लेख किया हैं। जैसे रक्षा क्षेत्र, विदेशी सम्बन्धों का क्षेत्र और वित्त क्षेत्र। भारतीय जनता पार्टी की विदेश नीति की प्रमुख प्राथमिकता आर्थिक सुरक्षा रही। इसमें पार्टी के तत्कालीन नेता ने यह बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार भारत आधुनिक भारत तथा उभरती शक्ति के रूप में विकसित हुआ। लेखक ने इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों में तत्कालीन विदेश मंत्री ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

Mohan (2015) प्रस्तुत पुस्तक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में निभायी गयी अब तक की गतिविधियों का वर्णन किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की ही विदेश नीति का अनुसरण करते हुए पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों को सुधारने पर बल दिया जा रहा है। भारत की विदेश नीति में हिन्द महासागर को प्रमुख रूप से प्राथमिकता दी जा रही है। समुद्री देशों जैसे सेशेल्स, वियतनाम, ऑस्ट्रेलिया के साथ समझौते किए गये है। भारत की विदेश नीति

की प्रमुख चुनौतियाँ जैसे चीन के साथ सीमा–विवाद, पाकिस्तान के साथ आतंकवाद को लेकर मतभेदों का वर्णन किया है। लेखक ने प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति की गहराई से प्रशंसा करते हुए उनके द्वारा भारत की विदेश नीति में किए जानें वाले परिवर्तन तथा बदलावों को सराहा हैं।

Wallace (2015) प्रस्तुत पुस्तक लोकसभा चुनाव 2014 पर आधारित है, जिसका प्रमुख केन्द्र प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने लोकसभा चुनाव 2014 का अध्ययन करते हुए कहा है कि लोकसभा चुनावों के परिणामस्वरूप तत्कालीन गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार का गठन किया गया तथा मोदी को भारत का प्रधानमंत्री बनाया गया। अतः 16वें लोकसभा चुनावों में केन्द्र स्तर पर सत्ता का परिवर्तन हुआ। यह परिवर्तन 10 साल के अन्तराल के बाद हुआ जिसमें भाजपा सशक्त नेतृत्व व सशक्त दल के रूप में सत्ता में आयी। 2014 के चुनावों में भाजपा की विजय का प्रमुख कारण ही मोदी का करिश्माई व्यक्तित्व व गुजरात के विकास का मॉडल माना गया। इसी आधार पर भारतीय जनता ने अपना समर्थन प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी को दिया था। लेखक ने नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति का उल्लेख करते हुए कहा है कि मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में जापान, चीन के साथ आर्थिक सहयोग, पाकिस्तान प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ मित्रता, सार्क देशों के साथ मित्रता इत्यादि को प्राथमिकता दी है।

Izuyama (2015) का मानना हैं की भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार के नेतृत्व में विदेश नीति व सुरक्षा नीति पर प्रकाश डाला है। लेखक के अनुसार मोदी की विदेश नीति में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को सशक्त, समृद्ध तथा सुदृढ बनाने का प्रयास किया जा रहा है। लेखक का मानना हैं की प्रधानमंत्री की सुरक्षा की नीति के प्रमुख तीन लक्ष्य है जैसे आंतरिक सुरक्षा, सीमा विवाद का समाधान तथा रक्षा क्षेत्र में सुधार व परमाणु नीति हैं। मोदी सरकार की विदेश नीति में एक्ट ईस्ट पॉलिसी व लुक वेस्ट पॉलिसी प्रमुख है। इसके साथ ही साथ पड़ोसी राष्ट्रों के प्रति महत्वपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना प्रमुख प्राथमिकता है। प्रस्तुत लेख में लेखक ने भारत–चीन के सीमा विवाद पर प्रकाश डालते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि चीन समय–समय पर अरूणाचल प्रदेश को अपना अभिन्न हिस्सा बता कर भारत की सम्प्रभुता का खण्डन करता है। लेखक का विचार हैं कि मोदी सरकार अमेरिका को रक्षा क्षेत्र में अभिन्न सहयोगी बनाने पर बल दे रही है। जापान के साथ भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को बनाए रखने का महत्वपूर्ण प्रयास कर रहीं है।

Ganguly (2015) का मानना हैं कि हिन्दुत्व भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा हैं। लेखक का विचार हैं कि हिन्दुत्व राष्ट्रवाद सिद्धान्त की ऐतिहासिक जड़े विनायक दामोदर सावरकर और माधव गोलवलकर कें लेखों से मिलती हैं। लेखक ने नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति का उल्लेख करते हुए कहा है की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त आर्थिक विकास है। मोदी की विदेश नीति के अंतर्गत बांग्लादेश के साथ सीमा विवाद को सुलझाना प्रमुख सफलता रही तथा मोदी ने विदेश नीति की सफलतम शुरूआत करते हुए सार्क राष्ट्रों को अपने प्रधानमंत्री शपथ समारोह के उपलक्ष्य में आमंत्रित किया, जिसकी

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की गयी। भारत की विदेश नीति की प्रमुख प्राथमिकता सार्क राष्ट्र हैं। लेखक ने प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति को प्रभावशाली मानते हुए मोदी की प्रशंसा की हैं।

Muni (2015) का मानना है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति में मुख्य रूप से दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों में सुधार अथवा सुदृढ़ करने पर बल दिया है। लेखक नें इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति की प्रारम्भिक शुरूआत ही सार्क राष्ट्रों को शपथ समारोह में आमंत्रित करते हुए की। इससे स्पष्ट हुआ कि पड़ोसीवाद मोदी की विदेश नीति की प्रमुख प्राथमिकता है। अतः दक्षिण एशिया में भारत इस क्षेत्र का प्रमुख राष्ट्र तथा सर्वाधिक सुदृढ़ राष्ट्र है। लेखक ने पाकिस्तान के प्रति मोदी की विदेश नीति का उल्लेख करते हुए कहा है कि पाकिस्तान मोदी की विदेश नीति का केन्द्र बिन्दु रहा है। मोदी ने पाकिस्तान के साथ शांतिपूर्ण वार्ता का समर्थन किया, लेकिन पाक ने इस मुद्दे को लेकर अलगाववादियों से वार्ता की जिसके कारण भारत ने पाक से वार्ता रद्द की। पाकिस्तान का कहना है कि भारत कश्मीर के बिना पाकिस्तान से बात नहीं करना चाहता। पुनः मोदी सरकार के नेतृत्व में विदेश मंत्रालय के सचिव एस. जयशंकर के माध्यम से भारत—पाकिस्तान सम्बन्धों को सामान्य बनाने का प्रयास किया हैं। मोदी की विदेश नीति में चीन के साथ संबंधो में सुधार करने के प्रयास को प्रमुख प्राथमिकता दी है। लेखक ने विकासवाद को मोदी की विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त बताया है।

Hall (2015) ने इस तथ्य पर बल दिया कि सन् 2014 मई में लोकसभा चुनावों में ''मोदी सिद्धान्त'' भारत की विदेश नीति में उभरकर सामने आया। मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति का दृष्टिकोण कुछ स्तर तक परिवर्तित हुआ। लेखक का मानना है कि मोदी ने व्यवहारिक व यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है। लेखक का मानना है, भारतीय जनता पार्टी के 2014 के घोषणापत्र में तीन प्रमुख प्राथमिकताओं पर प्रकाश डाला गया था। जैसे— अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के अन्य राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों में सुधार, पाकिस्तान तथा चीन से भारतीय सीमा की सुरक्षा को बढ़ावा देना, अर्थव्यवस्था को प्राथमिकता देना जिसमें प्रवासी वर्ग, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रमुख है तथा लेखक के अनुसार मोदी की विदेश नीति में क्षेत्रीयता को बढ़ावा, आर्थिक विकास, सैन्य आधुनिकीकरण व सुरक्षा व्यवस्था को प्राथमिकता दी जा रही है।

Kumar (2016) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने तत्कालीन गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के समक्ष समय—समय पर आयी चुनौतियों का उल्लेख किया है। मोदी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य रहे हैं तथा इस संघ की हिन्दुत्व विचारधारा से प्रभावित हुए जो आज भी आन्तरिक स्तर पर मतभेद का कारण बनी हुई है। भाजपा पार्टी पर हिन्दुत्व को बढ़ावा देने का तथा साम्प्रदायिकता फैलाने का आरोप भी लगा है। लेखक का मानना है कि मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में प्रवासी वर्ग को महत्व दिया जा रहा है तथा मोदी ने अमेरिका के साथ सम्बन्धों की नयी शुरूआत एवं संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थायी सदस्यता हेतु दावेदारी की मांग की जा रही है। लेखक ने मोदी की विदेश नीति के तीन सिद्धान्तों को

प्राथमिकता दी है। जैसे आर्थिक क्षेत्र में वृद्धि, राष्ट्र की सुरक्षा व सम्प्रभुता को बनाए रखना, वैश्विक स्तर पर भारत के हितों को सुरक्षा प्रदान करना जैसे जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण के क्षेत्र में इत्यादि।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत की विदेश नीति की आधारशिला व विचारधारात्मक आधारों का अध्ययन करना।
2. भाजपा के शासनकाल में भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्वों का अध्ययन करना।
3. वाजपेयी के शासनकाल में भारत की विदेश नीति का अध्ययन करना।
4. मोदी के शासनकाल में भारत की विदेश नीति का अध्ययन करना।
5. भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों तथा राष्ट्रीय हितों कों प्राप्त करने में आने वाली राष्ट्रीय समस्याओं व अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियों एवं मुद्दों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. भारत की विदेश नीति व्यवहारिक कम आदर्शात्मक अधिक रही हैं।
2. भाजपा के शासनकाल में भारत की विदेश नीति सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिन्दुत्व पर आधारित रही हैं।
3. वाजपेयी के शासनकाल में भारत की विदेश नीति यथार्थवादी व पूंजीपति देशों की ओर आकर्षित रही।
4. मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति आर्थिक विकास तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर आधारित है।
5. भारत की विदेश नीति को राष्ट्रीय समस्या, सुरक्षा तथा चीन व पाकिस्तान के मध्य घनिष्ठ सम्बन्धों ने प्रभावित किया हैं।

शोध पद्धति

शोध अभिकल्प (Research Design) - वर्णनात्मक पध्दति

तथ्य - संकलन (Data –Collection) - प्रस्तुत अध्ययन के लिए आवश्यक तथ्य संकलन प्राथमिक तथा द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त किया जाएगा हैं।

प्राथमिक स्त्रोत : प्राथमिक स्त्रोतों में सरकारी दस्तावेजों का प्रयोग किया जाएगा। तथ्य संकलन के लिए इस विषय सें संबंधित विश्लेषकों तथा विशेषज्ञों से वार्तालाप किया जाएगा।

द्वितीयक स्त्रोत : द्वितीयक स्त्रोतों में प्रमुख रूप से पुस्तक, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं, जर्नल्स व ई-जर्नल्स इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन का महत्व

भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों व लक्ष्यों की प्राप्ति का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके माध्यम से ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र परस्पर संवाद व सहयोग स्थापित करते है। भारतीय जनता पार्टी की विदेश

नीति आर्थिक वृद्धि, राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रवासी, एक्ट ईस्ट पॉलिसी, पड़ोसीवाद प्रथम, तकनीकी, पाकिस्तान से सीधा संवाद, चीन के साथ सीमा विवाद पर वार्ता, आतंकवाद का विरोध, अमेरिका के साथ सहयोगपूर्ण सम्बन्ध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वाजपेयी के शासनकाल में भारत को सफलता के शिखर पर आसीन किया। जैसे 11 तथा 13 मई 1998 के परमाणु परीक्षण के आधार पर सशक्त बनाया, दक्षेस देशों के साथ सम्बन्धों को सुधारने का महत्वपूर्ण प्रयास किया गया। प्रधानमंत्री मोदी के शासनकाल में विदेश नीति को नवीन स्वरूप में परिवर्तित करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया जा रहा है। लम्बे समय से चले आ रहे सीमा विवाद का समाधान, शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ समझौते जैसे जापान के साथ बुलेट ट्रेन, चीन के साथ 20 अरब डॉलर का समझौता, आस्ट्रेलिया के साथ यूरेनियम समझौता, फ्रांस के साथ राफेल विमान समझौता इत्यादि। मोदी की विदेश नीति में भारत को सशक्त, सुदृढ़ व वैश्विक शक्ति बनाने पर बल दिया जा रहा है। भारत के वैश्विक शक्ति बनने के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर रहे कारणों का अध्ययन करना है। उपर्युक्त सभी तथ्यों का अध्ययन करना शोध की महत्ता को स्पष्ट करता है। यह शोध महत्वपूर्ण व गहनता का विषय है। प्रस्तुत अध्ययन, भारत की विदेश नीति के क्षेत्र में अध्ययन करनें वाले संशोधक, विश्लेषक तथा छात्रों की दृष्टि से यह अधिक महत्वपूर्ण है। भारत की विदेश नीति के निर्धारण में यह संशोधन कार्य महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने का महत्व रखता है।

प्रस्तावित अध्याय:-

1. प्रस्तावना
2. भारत की विदेश नीति की आधारशिला व विचारधारा
3. भाजपा संचालित सरकार के पूर्व सरकारों के कार्यकाल में भारत की विदेश नीति
4. भाजपा संचालित सरकार की विदेश नीति के निर्धारक तत्व
5. भाजपा तथा भारत की विदेश नीति : अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल के सन्दर्भ में (1998-2004)
6. भाजपा तथा भारत की विदेश नीति : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल के सन्दर्भ में (2014 से आगे)
7. भारत की विदेश नीति के समक्ष राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियाँ एवं मुद्दे
8. सुझाव एवं निष्कर्ष

References:

1 Arora,V.K.and Appadorai, A.(1975). India in World Affairs. New Delhi: Sterling Publishers.

2. Bandyopadhyaya, J, (2003), The Making of India's Foreign Policy, Allied Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, p-223.

3. Brockhaus, Enzyklopaedia (1967), Volume 2 (Wiesbaden), p-118.

4. Calvert, Peter (1986), The Foreign Policy of New States, New York, p-1.

5. Chaulia, Sreeram S, (2002), BJP, India's Foreign Policy and the "Realist Alternative" to the Nehruvian Tradition, http://srreeramchaulia.net/ publications/BJP. pdf, (accessed on 22 July, 2016).

6. Crabb, Jr. Cecil V(1972), American Foreign Policy in the Nuclear Age, New York, p-1.

7. Ganguly, Sumit, (2015), Hindu Nationalism and the Foreign Policy of India's Bharatiya Janata Party http://www.transatlanticacademy. org/site/default/files/ publications/ganguly_ Hindi_Nationalism Foreign Policy_Junis15_Web.pdf, (accessed on 22 July 2016).

8. Gupta, K.R. Vatsala Shukla (2009), Foreign Policy of India, Volume 1, Atlantic Publishers Distributors (p) Ltd., New Delhi, pp. 90-92.

9. Gupta, S. (1981), Great Power Relations, World Order and the Third World, in India and the International System: A Selection from The Major Writings of Sisir Gupta, ed. M.S. Rajan and S. Ganguly, Vikas Publishing House, New Delhi, p.41-87.

10. Hall, Ian, (2015), Is a Modi doctrine emerging in Indian Foreign Policy? http://www. tandfonline. com/doi/pdf/10.1080/10357718. 2014.1000263, (accessed on 17 August 2016).

11. Hill, Christopher (2003), The Changing Politics of Foreign Policy, New York.

12. Izuyama, Mari, (2015), India: The Foreign and Security Policy under the Modi Government, http://www. nids. go. in/ english/publications/ east-asian/pdf/2015/east-asian e 2015 05.pdf, (accessed on 21 July, 2016).

13. Jackson, Robert and Geroge Sorensen (2007), Introduction to International Relations: Theories and approaches, Oxford University Press, New York, p-223.

14. Karad, Satish (2015), Perspectives of Kautilya's Foreign Policy: An Ideal of State Affairs, Vol.2, Issue2, June 2015, http://Files.hostgator.co.in/hostgator 201172/File/ 2015020209. pdf, p-327, (accessed on 21 August 2016).

15. Ibid, pp-325-328.

16. Karunakaran, K. P.(1952). India in World Affairs (August 1947- January1950), Oxford University Press, Calcutta.

17. Kissinger, Henry (2014), World Order : Reflections on Character of Nations and the Course of History,Penguin Publishing Group, UK.
18. Kohli, Atul and Prerna Singh (2015), Routledge Handbook of Indian Politics, Routledge Taylor and Francis Group, London and New York, pp 87-88.
19. कुमार, अजय (2011), अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्त ''एक परिचय'' पीयर्सन पब्लिकेशन, नोएडा, पृष्ठ संख्या-1
20. Kumar, Rajiv (2016) Modi and his challenges, Bloomsbury, New Delhi.
21. Malone, David M et al, (2015), The oxford Handbookof Indian Foreign Policy, Oxford University Press, New York, p-95.
22. Mattoo, Amitabh (1996), "Raison d'Etat or Adhocism, " in Kanti Bajpai and Amitabh Mattoo, eds.,Securing India : Thoughts and Practices, Manohar Publications, Delhi, p. 204.
23. Mehta ,Pratap Bhanu (2009), Still Under Nehru's shadow? The Absence of Foreign Policy Frameworks in India, http://www.tandfonline.com/doi/ pdf/ 10.1080/1473648090311 6750? needAccess=true, pp=210-211. (accessed on 17 August 2016).
24. Modelsky, Georg (1962), A Theory of Foreign Policy, Pall Mall Press, London, pp 6-7
25. Mohan, C. Raja (2015), Modi's World: Expanding India's sphere of Influence, Harper Colins Publishers India, Noida.
26. Morgenthau, Hans. J (1985), Politics Among Nations,6th ed. Kalyani Publishers, New Delhi,p-12.
27. Muni ,SD, (2015), Narendra Modi's Foreign Policy: Rebuild South Asian Neighbourhood, http://www.claws.in/images/journals-doc/1139774315-SD Muni, pdf.(accessed on 22 July, 2016).
28. Pant, Harsh V(2009), Indian Foreign Policy challenges: Substantive Uncertainties and Institutional Infirmities,http://www.tandfonline.com/ doi/pdf/10.1080/03068370802 658 724? need Access= true, p-97. (accessed on 17 August2016).
29. Rajan,M.S (1964), India in World Afffairs (1954-56), Asia Publishing House, Bombay.
30. Singh, Jaswant (2006), A Call to Honour In Service of Emergent India, Rupa & Co., New Delhi.
31. Singh,Mona(2014),Indian Foreign Policy: From Idealism to Realism, https://www.worldwidejournals.com/international-journal-of-Scientific research (IJSR)/ file.php?Vol=May_2014_1400566399_b8b3b_29.pdf, pp- 91-92, (accessed on 22 August 2016).
32. Smith, steve et al, (2008), Foreign Policy- Theories, Actors, Cases (ed.) Oxford.

33. Swain, Pratap Chandra (2001), Bharatiya Janata Party, Profile and Performance, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi.

34. Wallace, Paul (2015), India's 2014 Elections A Modi-led BJP Sweep, sage Publications, India Pvt. Ltd., New Delhi.

35. Yadav, Surya Narain and Indu Baghel (2009), India's Foreign Policy Opportunities and Obstacles in the post-coldwar Era, Global Vision Publishing House, New Delhi, p-3.